व्याकरण पारिभाषिक शब्दावली –2

भ-

'यचि भम्' यकारादिष्वकारादिषु च कप्प्रत्ययावधिषु स्वादिष्वसर्वनामस्थानेषु परतः पूर्वं भसंज्ञं स्यात्। 'उरः प्रभृतिभ्यः कप्' इस सूत्र से होने वाले कप् प्रत्यय के पूर्व सर्वनामस्थान प्रत्ययो से भिन्न जो यकारादि और अजादि स्वादि प्रत्ययों के परे रहते हुए पूर्व प्रकृति की भ संज्ञा होती है। जैसे- दतः दत्+शस् यहाँ श की इत्संज्ञा लोप होने से यह अजादि प्रत्यय के अन्तर्गत माना जाता है उसके परे रहते दत् की भ संज्ञा होने से झलां जशोऽन्ते से जश्त्व नहीं हुआ त ही रह गया और दतः यह रुप सिद्ध होता है।

घु-

दाधा घ्वदाप्। दारुपा धारूपाश्च धातवो घुसंज्ञा स्युर्दाप्दैपौ विना। अर्थात् दाप् और दैप् धातुओं को छोड़कर दा रूप वाले और धा रूप वाले धातुओं की घु संज्ञा होती है। जैसे- डुदाञ् दाने और डुधाञ्= धारणपोषणयोः धातु की घु संज्ञा हो जाती है जिससे देयात् और धेयात् में 'एर्लिङि' सूत्र से एत्व होता है।

टि-

'अचोऽन्त्यादि टि' अचां मध्ये योऽन्त्यः स आदिर्यस्य तट्टि संज्ञा स्यात्। अचों के मध्य में जो अन्तिम अच् वह हो जिसके आदि में उस पूरे समुदाय की टि संज्ञा होती है। जैसे मनीषा मनस्+ईसा यहां मनस् शब्द में अन्तिम अच् नकरोत्तरवर्ती अकार है वह अस् के आदि में है इसलिए इस पुरे समुदाय अर्थात् अस् की टि संज्ञा होकर पररूप सन्धि हो जाती है।

संयोग-

हलोऽनन्तरा संयोगः। अज्भिरव्यवहिता हलः संयोगसंज्ञाः स्युः। अच् से रहित हलों = व्यंजनों की संयोग संज्ञा होती है। जैसे सुद्ध्युपास्यः में सु ध् ध् य् + उपास्यः यहाँ स्वर रहित ध् ध् य्

की संयोग संज्ञा होने से संयोगान्तस्य लोपः से य् लोप की प्राप्ति होती है। 'यणः प्रतिषेधो वाच्यम्' से निषेध होकर सुद्ध्युपास्यः प्रयोग सिद्ध होता है।

उपधा-

'अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा' अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः उपधासंज्ञः स्यात्। अन्तिम अल् (वर्ण) से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है। अल् में वर्णमाला के समस्त वर्ण का बोध होता है। जैसे- राजन् शब्द में अन्तिम अल् है न् उसके पूर्व वर्ण है जकारोत्तरवर्ती अ उसकी उपधा संज्ञा होती है।

प्रातिपदिक-

(क) 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' धातुभिन्नं प्रत्ययभिन्नं प्रत्ययान्तभिन्नं च अर्थवच्छब्दस्वरूपं प्रातिपदिकसंज्ञं स्यात्। अर्थात् धातु प्रत्यय और प्रत्ययान्त से रहित जो अर्थवान् शब्द उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। जैसे- राम शब्द की धातु प्रत्यय प्रत्ययान्त से रहित होने से और 'दशरथ पुत्र' यह अर्थ होने से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

(ख) 'कृत्तद्धितसमासाश्च' कृत्तद्धितान्तौ समासाश्च तथा स्युः। अर्थात् कृदन्त, तद्धितान्त और समास की भी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। कृदन्त – कर्ता, हर्ता, तद्धितान्त जैसे आदित्य, समास जैसे राजपुरुष इत्यादि की प्रकृत सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

सार्वधातुक-

'तिङ्शित्सार्वधातुकम्' तिङ् प्रत्यय और शकार इत्संज्ञक प्रत्यय की सार्वधातुक संज्ञा होती है। जैसे- भवति इस प्रयोग में भू शप् ति की स्थिति में इस सूत्र से शप् की सार्वधातुक संज्ञा होती है और सार्वधातुकार्धधातुकयों से सार्वधातुक परे रहते भू को गुण होकर भवति प्रयोग सिद्ध होता है।

आर्धधातुक-

'आर्धधातुकं शेषः' तिङ्शिद्भ्योरन्यो धातुरिति विहितः प्रत्ययः आर्धधातुक संज्ञः स्यात्। अर्थात् तिङ् शित् से भिन्न धातु से होने वाले प्रत्ययों की आर्धधातुक संज्ञा होती है। जैसे

भविष्यति, भू स्य ति इस स्थिति में स्य की आर्धधातुक संज्ञा होने से भू को गुण होकर भविष्यति प्रयोग सिद्ध होता है।

क्रमशः–